सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खाँ साहब की वादन शैली एवं संगीत के क्षेत्र में योगदान

शोध प्रारूप

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़ आगरा की
डॉक्टर ऑफ फिलॉसॅफी (संगीत)
की उपाधि हेतु
2014

निर्देशिका :

प्रो० (डॉ०) लवली शर्मा
कला भूषण से सम्मानित,
अन्तर्राष्ट्रीय सितार वादिका
चयनित कलाकार आकाशवाणी दिल्ली
चयनित कलाकार I.C.C.R.
(विदेश मंत्रालय, दिल्ली)
प्रोफेसर, (संगीत विभाग)

शोधार्थी :

सोनम सिंह
एम0ए0 (संगीत)
सितार वादन,
यू0जी0सी0, नेट

कला संकाय प्रमुख

प्रो0 रागिनी रॉय

संगीत विभागाध्यक्ष

प्रो0 सुभद्रा कुमारी सत्संगी

कला संकाय
दयालबाग़ शिक्षण संस्थान
दयालबाग़, आगरा–5

भूमिका

संगीत की समृद्ध परम्परा वैदिक काल से आज तक निरन्तर भिन्न-भिन्न स्वरूपों में प्रवाहमान है। ऐसा कहा जाता है कि मानव के प्रकृति में लीन हो जाने से कला की सृष्टि होती है, चाहें फिर वह संगीत कला हो अथवा अन्य कोई ललित कला।

जब हम संगीत को एक विषय के रूप में पढ़ना एवं समझना प्रारम्भ करते हैं, तो पाते हैं कि हमारे सभी ईष्ट देवी देवता किसी न किसी रूप में सांगीतिक विधाओं से जुड़े हुये हैं, यथा- शिवजी को नृत्य से, गणेश जी को मृदंग से, कृष्ण जी को बांसुरी से एवं सरस्वती जी को वीणा से सम्बन्धित माना जाता है, जो यह सत्यापित करता है कि संगीत पूर्णतः आध्यात्मिक है।

शोधार्थी वादन की विद्यार्थी होने के नाते नहीं, बल्कि प्राप्त हुए साक्ष्यों के आधार पर ही इस तथ्य पर प्रकाश डालने का प्रयास कर रही है कि जो वाद्यों का प्रयोग था, वह प्राचीन काल से ही पूर्णतः आध्यात्मिकता से ओत प्रोत है।

अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि जो संगीत रूपी त्रिवेणी है- **"गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते"**, इसमें जो वाद्यगत परम्परा है, वह अधिक परिपक्व, सुदृढ़ एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण है।

प्राचीन काल से ही वाद्य मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। मानव ने अपने भावों को व्यक्त करने के लिए वाद्यों का प्रयोग अनादिकाल से ही सहचरी के रूप में प्रारम्भ कर दिया था।

जिस प्रकार मानवीय सभ्यता में समयानुसार परिवर्तन होते आये हैं और उसका विकास हुआ है, उसी प्रकार हमारे संगीत में भी प्रगति के साथ साथ विकास होता रहा है तथा उसकी उन्नति होती रही है। गायन के साथ साथ विविध संगीत वाद्यों से भी भारत का संगीत समृद्ध हुआ है। **"आवश्यकता आविष्कार की जननी है।"** मानव ने अपनी कल्पना शक्ति एवं सूझ- बूझ के द्वारा अनेक प्रकार के वाद्यों का विकास किया, जिसमें प्राचीन काल के वाद्यों में परिवर्तन कर नवीन

वाद्यों का आविष्कार किया गया। जैसे- मृदंग एवं पखावज में परिवर्तन कर तबले का, वीणा में परिवर्तन कर सितार एवं सुरबहार आदि का विकास किया।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक असंख्य वाद्य अस्तित्व में आ चुके हैं, जिन्हें विद्वानों ने उनकी ध्वनि, विशेषता, बनावट के आधार पर विभिन्न वर्गो में विभाजित किया है, जो निम्न प्रकार हैं -

- तत् वाद्य
- सुषिर वाद्य
- अवनद्ध वाद्य
- घन वाद्य

शोध का विषय चूँकि तत् वर्ग के वाद्य से सन्बन्धित है अतः यहाँ केवल तत् वर्ग के अन्र्तगत आने वाले वीणा के परिवर्तित रूप सितार के विषय पर ही चर्चा की जायेगी।

आधुनिक युग में सर्वाधिक प्रसिद्ध तथा सर्वगुण सम्पन्न तत् वाद्य सितार मध्य युग में विकसित होता हुआ अपने वर्तमान रूप तक पहुँचा है।वर्तमान काल में सितार ने अपने तारों की मधुर-झंकार के कारण संगीत प्रेमियों को तो प्रभावित किया ही है, उसके अतिरिक्त सामान्य जनमानस में भी भारी लोकप्रियता प्राप्त कर ली है। विकसित वादन शैली के कारण इस वाद्य ने भारत ही नहीं वरन् समूचे विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है।

सितार वादकों की अनवरत साधना एवं संघर्ष के फलस्वरूप सितार एक स्वतन्त्र वाद्य के रूप में विकसित हुआ है।

यूँ तो बीसवीं शताब्दी में अनेक सितार वादक पैदा हुये, परन्तु इस वाद्य को अपने देश व विश्व के मानचित्र पर लाने का काम कुछ सितार वादकों ने ही प्रमुख रूप से किया, यथा पं.

रविशंकर, उ. विलायत खॉं साहब, पं. निखिल बनर्जी, उ. हलीम जाफर खॉं साहब, पं. बुदादित्य मुखर्जी, उ. शाहिद परवेज, उ. शुजात खॉं साहब, पं. अरविन्द पारीख, नीलाद्री कुमार आदि।

जब भारत में सितार वादन की शैली पर प्रकाश ड़ालते हैं, तो मुख्य रूप से चार प्रकार की शैलियॉं दृष्टिगोचर होती हैं,

- पं. रविशंकर जी की शैली
- उ. विलायत खॉं साहब की शैली
- उ. हलीम जाफर खॉं साहब की शैली
- पं. निखिल बनर्जी जी की शैली

उ. विलायत खॉं साहब का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सितार वादन क्षेत्र में अद्वितीय स्थान है। वे ऐसे कलाकार थे, जो किसी वाहवाही के मौहताज़ नहीं थे, बल्कि उन्होनें तो सितार को एक नवीन दिशा की ओर अग्रसरित किया और अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी। खॉं साहब की शैली अन्य शैलियों से बिल्कुल भिन्न थी।उन्होनें अपने सितार में गायिकी अंग का प्रयोग बड़े ही सृजनात्मक रूप से किया था।खॉं साहब ने ही सर्वप्रथम सितार में मींड तथा मुर्की का प्रयोग कर सितार वादन शैली को और चमत्कृत एवं परिष्कृत किया।

भारत की समृद्ध संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने तथा उसके वैविध्यपूर्ण स्वरूपों को नए- नए ढंग से सजाने का श्रेय उ. विलायत खॉं साहब को जाता है, जो अपनी तपस्या, सृजनात्मक क्षमता, परम्परागत कला की कठोर साधना के बल पर जनता को असीम एवं अनन्त सौन्दर्य का बोध कराते हैं।

खॉं साहब ने एक नयी सितार वादन शैली को परिष्कृत किया एवं सितार में लगने वाले तारों की संरचना को अपनी वादन शैली के अनुरूप परिवर्तित कर सितार के एक नए रूप को

जन्म दिया, जिसे आज विश्व में **गंधार-पंचम** नाम से जाना है, जिससे इस घराने का सितार वादन भारत में विशिष्ट सितार वादन विधा को परिचित कर सका।

उ. विलायत खॉं साहब ने सितार जगत् में जो अकथनीय योगदान दिया है, उससे विद्यार्थियों एवं संगीतप्रेमियों को अवगत करवाने हेतु एवं भावी सितार विद्यार्थी आपकी वादन शैली से लाभान्वित हो सकें, इस दृष्टिकोण से शोधार्थी द्वारा इस विषय का चयन किया गया है।

विषय कथन

सुप्रसिद्ध सितार वादक उ. विलायत खॉं साहब की वादन शैली एवं संगीत के क्षेत्र में योगदान।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य खॉं साहब के द्वारा सितार वाद्य में किये गये प्रयोगों का अध्ययन करना, उनके द्वारा प्रचलित विभिन्न बदिशों में निहित विशेषताओं को स्पष्ट करना, सितार के प्रचार प्रसार में उनके एवं उनके शिष्यों द्वारा किए गए योगदानों का अध्ययन कर इस शोध में सम्मिलित किया जायेगा, जिसके द्वारा वर्तमान पीढ़ी उनके द्वारा किए गये कार्यो से रूबरू हो सके एवं उनको अपना आदर्श मानकर सितार वादन कला का विकास करने में सक्षम हो सके।

अध्ययन प्रविधि

शोधकर्त्री द्वारा कियात्मक रूप से कार्य किया जायेगा एवं साक्षात्कार विधि, प्रश्नावली विधि तथा निरीक्षण विधि आदि का प्रयोग किया जायेगा।

परिसीमाकंन

उक्त शोध के माध्यम से खॉं साहब के व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदि सभी पक्षों पर गहराई एवं विस्तारपूर्वक अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा।इसके साथ ही उनके वादन में जो गायिकी अंग का बाहुल्य था, उसको मुख्य रूप से प्रकाश में लाने का प्रयास किया जायेगा ।प्रस्तुत

शोध में आपकी वादन शैली एवं अन्य सितार वादन शैलियों में क्या भिन्नता है ? इस पर भी शोधार्थी द्वारा पर्याप्त प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जायेगा, जिससे वर्तमान पीढ़ी इस वर्ग की शैलीगत भिन्नता से भली-भॉति परिचित हो सके।

उपकरण एवं सामग्री

विषय से सम्बधित आवश्यक सामग्री ही शोधकर्त्री के अध्ययन के साधन हैं,

जैसे - श्रव्य सामग्री - सीडी, डीवीडी, बन्दिश श्रवण आदि।

दृश्य सामग्री - पुस्तकें, साक्षात्कार, वीडियो आदि।

अध्ययन की प्रेरणा

उ. विलायत खॉ साहब सितार वादन के क्षेत्र में एक ऐसी शख्सियत रहे, जिनके विषय में जानना, जिनकी वादन प्रकिया एवं उसके सौन्दर्य को समझने के लिए सितार का विद्यार्थी तो प्यासा रहेगा ही, अतः उनके आदर्श एवं कठिन परिस्थिति में भी वादन के लिए समर्पण ने शोधार्थी को इस विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

अध्ययन के सोपान

उक्त अध्ययन से सम्बधित अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध कराने के पश्चात् शोध को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया जायेगा,

भूमिका

प्रथम अध्याय सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

द्वितीय अध्याय खॉं साहब की जीवन शैली

तृतीय अध्याय सितार वादन के घराने

चतुर्थ अध्याय खॉं साहब का कृतित्व

पंचम अध्याय खॉं साहब की वादन शैली

षष्टम् अध्याय खॉं साहब की वादन शैलीगत भिन्नता

सप्तम् अध्याय निष्कर्ष

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संगीत विशारद	बसंत
संगीत पत्रिका	संगीत कार्यालय (हाथरस)
सितार चिन्तन	प्रो माया टॉक
भारतीय संगीत का इतिहास	डॉ. श्री धर परान्जपे
सितार वादन की शैलियॉं	रजनी भटनागर
सितार का सौन्दर्यात्मक मूल्याकंन	डॉ. वन्दना शर्मा
तन्त्री वाद्य सितार एवं वादनीय बंदिशें	डॉ. गौरी
उ विलायत हुसैन खॉं व्यक्तित्व एवं कृतित्व	जयति मैत्रा
भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिन्तन	डॉ. अन्जना भार्गव
प्रतिष्ठित सितार एवं सरोद वादकों की साधना और संघर्ष	शान्तनु शर्मा